Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848 Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

नवम्बर /2021ई०

MONTHLY ANSARULLAH QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

NOVEMBER-2021

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆9876332272 | Manager: Syed Tufail Ahmad Shahbaz ✆8968184270
Annual Subscription: Rs-210/- | Per Issue: Rs-20/- | Weight: 50-100 gms/Issue

22-10-2021 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के Live Streaming के द्वारा मस्जिद में जमा होकर देखते हुए मज्लिस अंसारुल्लाह पत्तापीरियम (केरल) के सदस्य।

22-10-2021 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के आरम्भ सेशन में सालाना कारगुज़ारी रिपोर्ट मज्लिस अंसारुल्लाह भारत पेश करते हुए श्री डॉक्टर जावेद अहमद लोन।

22-10-2021 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के Live Streaming के द्वारा मस्जिद में जमा होकर देखते हुए मज्लिस अंसारुल्लाह बैंगलोर (कर्णाटक) के सदस्य।

23-10-2021 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के तरबियती इजलास में श्री मौलाना मुनीर अहमद खादिम एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद जुनूबी हिन्द क़ादिआन भाषण देते हुए।

23-10-2021 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के तरबियती इजलास में श्री मौलाना मुहम्मद हमीद कौसर नाज़िर दावते इलल्लाह उत्तर भारत भाषण देते हुए ।

22-10-2021 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के इजलास मुक़ाबिला हुस्ने क़िरत की अध्यक्षता करते हुए श्री मौलाना मुहम्मद इनायतुल्लाह एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद जुनूबी हिन्द (तालीमुल क़ुरान, वक़्फ़े आरज़ी) क़ादिआन ।

23-10-2021 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के तरबियती इजलास में श्री अब्दुल मोमिन राशिद नायब सदर अव्वल मज्लिल अंसारुल्लाह भारत (सभा अध्यक्ष) भाषण देते हुए ।

24-10-2021 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के इजलास मुक़ाबिला तक़रीर की अध्यक्षता करते हुए श्री मौलाना सुल्तान अहमद ज़फर क़ादिआन ।

23-10-2021 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह भारत के इजलास मुक़ाबिला नज़्म ख़्वानी की अध्यक्षता करते हुए श्री मौलवी इस एम् बशीरुद्दीन नाज़िम जायदाद,अफसर मुहासिब सदर अंजुमन अहमदिय्या क़ादिआन।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنصَارَ اللَّهِ
سورۃ الصّف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 19   **नवम्बर 2021**   **Issue - 11**

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - अगर तुम ने मुक़ाबला ही करना है तो नेकी और तक्वा में करो।	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन ख़िलाफत की हिफाज़त और औलाद की तरबियत	6
नमाज़ की बरकतें	8

निगरान
अताउल मुजीब लोन

सम्पादक
सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
09915379255

मैनेजर
सय्यद तुफैल अहमद
शहबाज़
Ph. 89681 84270

कम्पोज़िंग
आसमा तय्यबा

प्रैस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य : 210 ₹
विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान - 143516
ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 01872-220186
फैक्स : 01872-224186

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

اِنَّ الَّذِیۡنَ ہُمۡ مِّنۡ خَشۡیَۃِ رَبِّہِمۡ مُّشۡفِقُوۡنَ ۙ○ وَ الَّذِیۡنَ ہُمۡ بِاٰیٰتِ رَبِّہِمۡ یُؤۡمِنُوۡنَ ۙ○ وَ الَّذِیۡنَ ہُمۡ بِرَبِّہِمۡ لَا یُشۡرِکُوۡنَ ○
وَ الَّذِیۡنَ یُؤۡتُوۡنَ مَاۤ اٰتَوۡا وَّ قُلُوۡبُہُمۡ وَجِلَۃٌ اَنَّہُمۡ اِلٰی رَبِّہِمۡ رٰجِعُوۡنَ ۙ○ اُولٰٓئِکَ یُسٰرِعُوۡنَ فِی الۡخَیۡرٰتِ وَ ہُمۡ لَہَا سٰبِقُوۡنَ

(सूरः अल मोमिनून आयत 58-62)

अनुवाद -अवश्य वे लोग जो अपने रब के रोब से डरने वाले हैं। और वे लोग जो अपने रब की आयतों पर ईमान लाते हैं। और वे लोग जो अपने रब के साथ सझी नहीं ठहराते। और वे लोग कि जो भी वे देते हैं इस हाल में देते हैं कि उनके दिल (इस ख़्याल से) डरते रहते हैं कि वे अवश्य अपने रब के पास लौट कर जाने वाले हैं। यही वे लोग हैं जो भलाइयों में तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं और वे उन में प्राथमिकता ले जाने वाले हैं।

दर्सुल हदीस

अनुवाद - :: हज़रत अबूज़र रज़ि वर्णन करते हैं कि कुछ लोग आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और आप से निवेदन किया कि दौलतमंद लोग सारा सवाब ले गए। वे भी नमाज़ पड़ते हैं जिस तरह हम नमाज़ पढ़ते हैं और रोज़े रखते हैं जिस तरह हम रखते हैं और फिर अपने ज़ाइद माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं। आप ने फ़रमाया क्या अल्लाह तआला ने तुमको माल नहीं दिया जो तुम बतौर सदक़ा ख़र्च करो? याद रखो हर तस्बीह सदक़ा है , हर तक़बीर सदक़ा है और अलहम्दो लिल्लाह कहना सदक़ा है लाइलाहा इल्लल्लाहो कहना सदक़ा है , नेकी का हुक्म देना सदक़ा है बुराई से रोकना सदक़ा है बल्कि पत्नी धर्म अदा करना भी सदक़ा है। लोगों ने निवेदन किया। हे अल्लाह के रसूल! क्या अपनी इच्छा पूरी करने में भी सवाब मिलता है? आप ने फ़रमाया क्या तुम देखते नहीं कि अगर कोई व्यभिचार करता हो तो इस को गुनाह होगा तो इसी तरह अगर वह अल्लाह तआला की रज़ा के लिए हलाल और जायज़ मार्ग धारण करे तो उस को सवाब भी मिलेगा।

(मुस्लिम किताबुल ज़क़ात)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

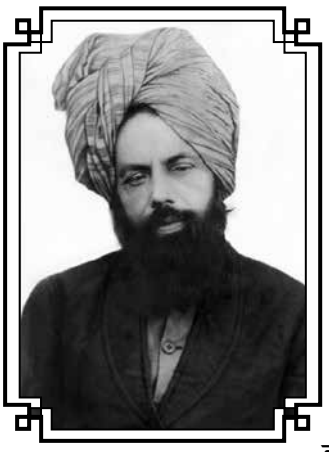

यह मानवजाति के सुधार का असाधारण कार्यभार केवल कागज़ो के घोड़े दौड़ाने से ही सम्पन्न नहीं हो सकता।

"नि:सन्देह यह बात विश्वसनीय और सर्वमान्य विषय में से है कि यह मानवजाति के सुधार का असाधारण कार्यभार केवल कागज़ो के घोड़े दौड़ाने से ही सम्पन्न नहीं हो सकता। इसके लिए इसी मार्ग पर चलना ज़रूरी है जिस पर प्रारम्भ से ख़ुदा तआला के पवित्र नबी चलते आये हैं और इस्लाम ने अपना क़दम रखते ही इस प्रभावपूर्ण व्यवस्था को ऐसी दृढ़ता और सशक्त रूप में जारी रखा है कि इसका उदाहरण दूसरे धर्मों में कदापि नहीं पाया जाता। कौन इस बड़ी जमाअत का दूसरी जगह अस्तित्व दिखा सकता है जो संख्या में दस हज़ार से भी अधिक बढ़ गई थी और आस्था, निष्ठा, विनीतता, कठोर परिश्रम, पूर्ण लगन से सत्य की प्राह्रिश्वत के लिए और सच्चाई को जानने के लिए नबी की चौखट पर दिन रात पड़ी रहती थी। नि:सन्देह हज़रत मूसा को भी एक जमाअत मिली थी परन्तु वह कैसी और कितनी अवज्ञाकारी और विद्रोही और आध्यात्मिक संगत साधना और सत्य पर कायम रहने से वञ्चित थी। इस बात को बाइबल के पढऩे और यहूदियों के इतिहास पर दृष्टि डालने वाले अच्छी प्रकार जानते हैं परन्तु आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जमाअत ने अपने प्रिय रसूल के मार्ग में ऐसी एकता और आध्यात्मिक एकरूपता पैदा कर ली थी कि इस्लामी भाई-चारा की दृष्टि से वास्तव में एक शरीर की भाँति हो गई थी और उनके दैनिक व्यवहार और जीवनशैली और अन्दर और बाहर में नुबुव्वत के प्रकाश ऐसे रच गये थे कि मानो वे सभी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रतिबिम्ब स्वरूप थे। अत: यह महान चमत्कार आन्तरिक बदलाव का जिस के द्वारा घोर मूर्ति पूजक अल्लाह के पूर्ण आराधक बन गये और नित्य सांसारिक बातों में मगन रहने वाले सच्चे ख़ुदा से ऐसा सम्बंध स्थापित कर गये कि उस के मार्ग में पानी की भाँति अपने रक्त बहा दिए। यह वस्तुत: एक सच्चे और सम्पूर्ण नबी की सँगत में निष्ठापूर्वक जीवनयापन करने का परिणाम था। अत: इसी कारण यह विनीत इस क्रम को क़ायम रखने के लिए नियुक्त किया गया है और चाहता है कि संगत में रहने वालों का क्रम और भी अधिक विस्तार के साथ बढ़ा दिया जाए और ऐसे लोग दिन रात संगत में रहें कि जो ईमान, प्रेम और विश्वास के बढ़ाने के लिए शौक रखते हों और उन पर वे प्रकाश प्रकट हों कि जो इस विनीत पर प्रकट किए गये हैं और वह आनन्द उनको मिले जो इस विनीत को प्रदान किया गया है ताकि इस्लाम का प्रकाश विस्तारपूर्वक संसार में फैल जाए और घृणा और अपमान का काला दाग़ मुसलमानों के माथे से धोया जाए। इसी की ख़ुशख़बरी देकर ख़ुदा तआला न मुझे भेजा ।

(फत्ह इस्लाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 19 से 23)

सम्पादकीय

अगर तुमने मुक़ाबला ही करना है तो नेकी और तक़्वा में करो

सय्यदना हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने 26 जुलाई 1940 ई को मज्लिस अन्सारुल्लाह का नियमित ऐलान फ़रमाया। इस तंज़ीम का मुख्य उद्देश्य नेकियों में सबक़त ले जाना है। अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में फ़रमाता है

وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ

(अलबकर: 149)

अर्थात और हर एक के लिए एक लक्ष्य है जिसकी तरफ़ वह मुँह फेरता है। अत: नेकियों में एक दूसरे पर प्राथमिकता ले जाओ।

नेकियों में आगे बढ़ने की इस रूह को क़ायम रखने के लिए ज़ैली तन्ज़ीमों में मज्लिसों के मध्य मुवाज़ना का निज़ाम जारी है। इस साल पहली बार आदरणीय सदर साहिब मजलिस अन्सारुल्लाह भारत ने सय्यदना हुज़ूर अनवर की मन्ज़ूरी से मज्लिसों के तीन ग्रुप बनाए हैं।

(1)ऐसी मज्लिस जिनकी तजनीद 1 से 20 है।

(2)ऐसी मज्लिसें जिनकी तजनीद 21 से 50 है।

(3)ऐसी मज्लिसें जिनकी तजनीद 50 से अधिक है।

साल भर के काम का मुवाज़ना करने के बाद तीनों ग्रुपों में पहली दस मज्लिसों को सय्यदना हुज़ूर अनवर के मुबारक हाथ से दस्तख़त किए हुए प्रमाणपत्र और ट्रॉफ़ियाँ दी जाती हैं।

किसी भी मज्लिस को इस मवाज़ना में शामिल होने के लिए इस मज्लिस की 12 रिपोर्टें समय पर केन्द्रीय दफतर में पहुंचना सब से बुनियादी शर्त है। इस के बाद लाहे अमल के अनुसार मासिक़, छ मासिक और वार्षिक कामों को सम्मुख रखते हुए कुल नम्बर निर्धारित किए जाते हैं और फिर प्राप्त किए गए नम्बरों के अनुसार आदरणीय सदर साहिब मजलिस अंसार अल्लाह भारत की मंज़ूरी से अव्वलीन दस मजालिस का ऐलान किया जाता है। यह एक बहुत सौभाग्य होता है। कम तजनीद वाली मज्लिसों को हम याद दिलाना चाहते हैं कि इस साल वर्चोल मीटिंग के दौरान सय्यदना हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया है कि

"तीन चार अन्सार.. को तो अधिक अच्छा काम करना चाहीए। तीन चार तो एक मिसाली मज्लिस बन सकती है। कि वहां कोई मसला ही नहीं ज़्यादा लोगों का। जितने ज़्यादा लोग हों इतना काम करना मुश्किल होता है। जितने कम लोग हों इतना काम करना आसान है।"

इस अवसर पर हुज़ूर अनवर ने मासिक कार-गुज़ारी रिपोर्टों के बारे में आदरणीय क़ायद उमूमी साहिब की विशेष राहनुमाई फ़रमाई है। अत: इस दृष्टि से समस्त मज्लिस के ज़ईमों और ज़िला के नाज़मीन को मासिक कार-गुज़ारी रिपोर्ट भिजवाने के सम्बन्ध में विशेष कोशिश करने की ज़रूरत है। नेकियों में मुक़ाबला का प्रोत्साहन दिलाते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं

"अगर यह आगे बढ़ने की भावना क़ौमी रंग में पैदा हो जाए और हर व्यक्ति नेकियों में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करे तो दुनिया के समस्त झगड़े और फ़साद मिट जाएं और अमन और सुलह का दौर दौरा हो जाए। .....इस्लाम कहता है कि अगर तुमने मुक़ाबला ही करना है तो नेकी और तक़्वा में करो। ख़ुदा तआला की मुहब्बत और अल्लाह

तआला से सम्बन्ध बढना में करो। इस्लाम के प्रचार प्रसार और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम के फैलाने में करो। दुनयावी तरक़्क़ी की कोशिशों में करो। और गंदे मुक़ाबलों में अपनी ताक़तें ख़र्च न करो।"

(तफ़सीर कबीर भाग 6 पृष्ठ 183 से 184)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं। "इस्लाम तो इन्सान को चुस्त, होशियार और तत्पर बनाना चाहता है। इस लिए मैं तो कहता हूँ कि तुम अपने कारोबार को कोशिशों से करो।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 184)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रैहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"तीनों ज़ैली तंज़ीमें मासिक रिपोर्टें सीधा मुझे भिजवाया करें। लंदन दफ़्तर प्राईवेट सेक्रेटरी में तीनों ज़ैली तन्ज़ीमों के विभाग हैं। इन के दफतर हैं जो सारा रिकार्ड रखते हैं और रिपोर्टों पर नियमित मेरी तरफ़ से हिदायात भिजवाई जाती हैं।"

(उद्धरित सबीलुर्रशाद 4 पृष्ठ 374)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें सय्यदना हुज़ूर अनवर की हिदायतों पर दिल की गहराई से अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन।

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

ख़िलाफ़त की हिफ़ाज़त, औलाद की तरबियत

अल्लाह तआला के फ़ज़ल तथा करम से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की विशेष दुआओं से सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत इस साल शानदार तरीक़े पर कादियान दारुल अमान में आयोदित हुआ। इस अवसर पर हमारे निवेदन को स्वीकार करते हुए सय्यदना हुज़ूर अनवर ने अपना ईमान वर्धक पैग़ाम भिजवाया है। जिसमें हमें सय्यदना हुज़ूर अनवर ने ख़िलाफ़त की हिफ़ाज़त और तर्बीयत औलाद की तरफ़ विशेष रूप से ध्यान दिलाया है। जैसा कि हज़ूर अनवर फ़रमाते हैं

"अत: नेक नमूना, औलाद की नेक तर्बीयत और उन के लिए दुआ को अपनी दैनिक आदत बना लें। फिर यह भी हमेशा याद रखें कि अन्सारुल्लाह का एक बहुत बड़ा काम जैसा कि आप के वादा में भी है, ख़िलाफ़त की सुरक्षा करना है।"

(पैग़ाम हुज़ूर अनवर सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत 2021 ई)

वास्तव में समय का ख़लीफ़ा जिस बात की तरफ़ हमारा ध्यान दिलाते हैं,वह हमारी ज़रूरत हुआ करती है। इस लिए इस साल इन दोनों बातों को लाहे ए-अमल का रूप देकर हमें इन हिदायतों पर अनुकरण करने की भरपूर कोशिश करनी चाहीए। ख़िलाफ़त की हिफ़ाज़त और तर्बीयत औलाद के महत्व को उजागर करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं

"याद रखो तुम्हारा नाम अन्सारुल्लाह है अर्थात अल्लाह तआला के सहायक। मानो तुम्हें अल्लाह तआला के नाम की तरफ़ सम्बंधित किया गया है और अल्लाह तआला अनादि और चिरस्थायी है। इसलिए तुमको भी कोशिश करनी चाहिए कि अब्दीयत के द्योतक हो जाओ। तुम अपने अन्सार होने की निशानी अर्थात ख़िलाफ़त को हमेशा हमेशा के लिए क़ायम रखते चले जाओ और कोशिश करो कि यह काम नस्ल के बाद नस्ल में चलता चला जाए और इस के दो तरीक़े हो सकते हैं। एक तरीक़ा तो यह है कि अपनी औलाद की सही तर्बीयत की जाए और इस में ख़िलाफ़त की मुहब्बत क़ायम की जाए। इसी लिए मैंने अतफ़ालुल अहमदिया की तन्ज़ीम स्थापित की थी और ख़ुद्दामुल अहमदिया की स्थापना हुई थी। यह अतफ़ाल और ख़ुद्दाम आप लोगों के ही बच्चे हैं। अगर अतफ़ालुल अहमदिया की तर्बीयत सही होगी। तो ख़ुद्दामुल अहमदिया की तर्बीयत सही होगी और अगर ख़ुद्दामुल अहमदिया की तर्बीयत सही होगी तो अगली नस्ल अन्सारुल्लाह की उच्च होगी। मैंने सीढ़ियां बना दी हैं। आगे काम करना तुम्हारा काम है। पहली सीढ़ी अतफ़ालुल अहमदिया है। दूसरी सीढ़ी ख़ुद्दामुल अहमदिया है। तीसरी सीढ़ी अन्सारुल्लाह है और चौथी सीढ़ी ख़ुदा तआला है। तुम अपनी औलाद की सही तर्बीयत करो और दूसरी तरफ़ ख़ुदा तआला से दुआएं माँगो तो ये चारों सीढ़ियां सम्पूर्ण हो जाएंगी। अगर तुम्हारे अतफ़ाल और ख़ुद्दाम ठीक हो जाएं और फिर तुम भी दुआएं करो और ख़ुदा तआला से सम्बन्ध

पैदा कर लो। तो फिर तुम्हारे लिए अर्श से नीचे कोई जगह नहीं और जो अर्श पर चला जाए वह बिल्कुल सुरक्षित हो जाता है। दुनिया हमला करने की कोशिश करे तो वह ज़्यादा से ज़्यादा सौ दो सौ फुट पर हमला कर सकती है। वह अर्श पर हमला नहीं कर सकती। अत: अगर तुम अपना सुधार कर लोगे और ख़ुदा तआला से दुआएं करोगे तो तुम्हारा अल्लाह तआला से सम्बन्ध क़ायम हो जाएगा और अगर तुम हक़ीक़ी अन्सारुल्लाह बन जाओ और ख़ुदा तआला से सम्बन्ध पैदा कर लो तो तुम्हारे अन्दर ख़िलाफ़त भी स्थायी रूप पर रहेगी और वह ईसाइयत की ख़िलाफ़त से भी लंबी चलेगी।

(अलफ़ज़ल 21 मार्च 1957 ई 24 मार्च 1957 ई)

प्यारे अन्सार भाइयो!

अत: मैं समस्त अन्सार भाइयों को दिल की गहराई और तड़प के साथ ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि अपनी औलाद के दिलों में ख़िलाफ़त की मुहब्बत को इस तरीक़ा क़ायम करें कि वे ख़िलाफ़त से जारी होने वाली हर हिदायत पर ज़ौक़ तथा शौक़ से अल्लाह तआला की रज़ा के लिए अनुकरण करने वाले हों।

नाज़मीन तथाज़ुअमा क़िराम इस हवाला से अपने ज़िलों में विशेष रूप से ध्यान दिलाते रहें। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन।

अताउल मुजीब लोन

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Maqbool Ahmed
Cell : 9949310679
: 9949209561

Plant Medicine

Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles

H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53

Mob: 9008510546

Akmal Tailor

Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030

زبیر احمد شحنہ

ZUBER

Engineering Works
Body Building All Types of
Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

नमाज़ की बरकतें

शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री
नायब सदर सफ़ दोयम मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

(1) नमाज़ पांच वक्त की फर्ज़ है जिसमें इन्सान के लिए किसी छूट की कोई गुंजाइश नहीं।

(2)क़ुरआन के सब्दों में नमाज़ ऐसा फ़रीज़ा है जिससे मौकूतन कहा गया है। (إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَّوْقُوتًا)(अन्निसा 104) मौकूतन के तीन अभिप्राय हो सकते हैं

(क)एक यह कि इस के समय ख़ुदा तआला की तरफ़ से निर्धारित हैं।

(ख) दूसरा अभिप्राय यह है कि समय की तक़सीम की बुनियाद नमाज़ पर होनी चाहिए। देखा यह गया है कि आम तौर पर मुस्लिम परिवेश में नमाज़ों की परवाह किए बग़ैर प्रोग्राम बना लिए जाते हैं। विशेष रूप से जमाअत के आयोदनों को नमाज़ों के समयों के अधीन रखने की ज़रूरत है। मानो नमाज़ के अधीन दैनिक प्रोग्राम हों न कि प्रोग्रामों के अधीन नमाज़ कर दी जाए। दोस्तों को इस तरफ़ विशेष द्यान देना चाहिए।

(ज) तीसरा अभिप्राय मौकूतन से यह मिलता है जो अपने अंदर एक भविष्यवाणी का रूप भी रखता है कि एक ख़ास ज़माना ऐसा आना निर्धारित था जब कि वक़्त की क़द्रो क़ीमत ग़ैरमामूली रूप से बढ़ जानी थी। हर शख़्स की ज़बान पर बावजूद मस्रूफ़ियत के आप सुनेंगे कि मेरे पास वक़्त नहीं और उठते बैठते चलते फिरते हर शख़्स की नज़र घड़ी पर होगी। ऐसे दौर में नमाज़ की फ़र्ज़ीयत में कमी नहीं आएगी बल्कि इस पर ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत होगी और आज ऐसा ही दौर से दुनिया गुज़र रही है

(3) नमाज़ों को फ़रीज़ा क़रार देने में ख़ुद इन्सान के लाभों को सम्मुख रखा गया है। ख़ुदा तआला को इस बात से कोई लाभ नहीं पहुंचता कि कोई शख़्स नमाज़ अदा करता है या नहीं। इस लिए जो लोग नमाज़ अदा करके अल्लाह तआला या उस की जमाअत पर किसी उपकार का इज़हार करते हैं वे ग़लती का शिकार हैं

(4) नमाज़ से मिलने वाले लाभों की तरफ़ क़ुरआन करीम में अल्लाह तआला यूं इशारा फ़रमाता है إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ

अर्थात नमाज़ निर्लज्जता और बुरी बातों से रोकती है। फ़हशा से अभिप्राय इस तरह की बातें हैं जिनकी बुराई हर तरफ़ स्पष्ट रूप से ज्ञात है। इनमें कोई दो राय नहीं हो सकती।

मुन्किर से अभिप्राय इस तरह की बातें हैं जिन्हें ख़ास माहौल में या विशेष वर्गों में नापसंद समझा जाता है। मगर एक साधारण आदमी की निगाह वहां तक नहीं पहुँचती। नमाज़ दोनों किस्म की बातों से इन्सान को बचाने का माध्यम है।

(5) नमाज़ अल्लाह तआला के क़रीब होने और इस से वार्तालाप करने का माध्यम है اَلصَّلٰوۃُ مِعْرَاجُ الْمُؤْمِنِ में इसी तरफ़ इशारा है

(6) चूँकि अल्लाह ताआला की ज़ात पवित्र है इस लिए उस के कुर्ब और वार्तालाप का एक क़ुदरती मांग यह है कि इन्सान के लिए भी पाकीज़गी लाज़िम ठहरती है। और इस पाकीज़गी में हर तरह की पाकीज़गी शामिल है। नीयत की पाकीज़गी

,ज़बान की पाकीज़गी, शरीर की पाकीज़गी, लिबास की पाकीज़गी ,जगह की पाकीज़गी ,माहौल की पाकीज़गी , और शब्द तथा वर्णन की पाकीज़गी ये सारी पाकीज़गीयाँ जमा हों तो इस पवित्र हस्ती की क़ुरबत और हमकलामी नसीब होती है। और नमाज़ इन सारी पाकीज़गियों पर हावी है

(7) नमाज़ सफ़ाई और सेहत के उसूलों को अपनाने में इन्सान के लिए सहायक साबित होती है। क्योंकि एक बाक़ायदा नमाज़ी को जिस्म की सफ़ाई मुँह की सफ़ाई और लिबास की सफ़ाई की विशेष नसीहत है। एक बाक़ायदा नमाज़ी गंदगी को किसी हालत में सहन नहीं करता। इसी कारण से हुक्म है कि बदबूदार चीज़ इस्तिमाल कर के ख़ुदा के घर में न आएं। ताकि दूसरों के लिए कष्ट का कारण न हो।

(8) नमाज़ मुश्किलों और तकलीफ़ों को दूर करने का बेहतरीन माध्यम है। उदऊनी अस्तजिब लकुम में इस तरफ़ इशारा है

(9) हर किस्म की परेशानी और घबराहट में दिल का सुकून चाहिए हो तो उस के लिए नमाज़ में निजात का सामान मौजूद है। अला बिज़िक्ररिल्लाह में आम ज़िक्र और नमाज़ दोनों शामिल हैं

(10) इन्सान अल्लाह तआला की तरफ़ इलम और मार्फ़त का सदा इच्छुक रहता है। नमाज़ में आसमानी मआरिफ़ भी इन्सान पर खुलते हैं। اَلصَّلٰوۃُ مِعۡرَاجُ الۡمُؤۡمِنِ में यह पहलू भी शामिल है। क्योंकि मेराज दरअसल आकाशीय ज्ञान मिलने का नाम है।

(11) नमाज़ की ग़ैरमामूली बरकतों पर असंख्य बुज़ुर्गान और मुक़र्रबीन के अनुभव गवाह हैं और हर व्यक्ति अपने रूहानी ज़र्फ़ के अनुसार नमाज़ों से लाभ पा सकता है चूँकि नमाज़ की बरकतें असीमित हैं और हर इन्सान के लिए इन बरकतों को प्राप्त करना संभव है (12) नमाज़ वास्तव में ज़हनी कलबी और जिस्मानी तौर पर अल्लाह तआला के साथ मुलाकात का नाम है।

(13) नमाज़ में सामूहिक दुआ का अवसर नसीब होता है और इस बात की संभावना पैदा होती है कि इन्सान की जो अलग अलग दुआएं क़बूल नहीं हो रही हैं वे इन सामूहिक दुआओं में शामिल हो कर क़बूलीयत पा जाएं। इय्यक नअबुदू व इय्याक़ नस्तईन में यही बात वर्णन हुई है।

(14) बाजमाअत नमाज़ में यह अवसर मिलता है कि आपस के रुहानी प्रभाव एक दूसरे में स्थांतरित हों। इसी लिए नमाज़ में कंधे से कंधा मिला कर खड़ा होने का हुक्म है। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कैफ़ीयत के दृष्टि से नमाज़ को एकता स्थापित करने वाली इबादत क़रार दिया है। जिसमें कंधे से कंधा मिला कर खड़ा होने से दूसरे में रुहानी प्रभाव स्थांतरित होते हैं। लोगों को इस कारण से सफ़ों की दुरुस्ती का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कई बार इस के विपरीत बहुत ही आश्चर्यजनक दृश्य सामने नज़र आता है। कि लोग मस्जिद में आकर बजाय सफ़ों में बैठने के इधर उधर टोलियों में बट कर बैठते हैं और उन्हें इस हालत में देखकर ये विचार पैदा होता है कि शायद ख़ुदा के घर में आकर भी हमें अपने भाईयों के साथ इस तौर पर मिल बैठने में रोक है कि आपस में क़ुरबत भी हो और नियम श्रंखला की झलक भी हो।

(15) नमाज़ की ज़ाहिरी शक्ल में अर्थात सफ़ों में खड़े होने से ये सब देना अभिप्राय है कि

(क) आपस में सहयोग की ऐसी रूह पैदा हो कि एक दूसरे की दृढ़ता का कारण बनें।

(ख) सामूहिक रक्षा की शिक्षा देना भी लक्ष्य है कि व्यक्ति अकेला एक बूंद की तरह है। परन्तु बिन्दुओं से मिलकर एक सैलाब की शक्ल धारण कर सकते हैं उनके सामने शैतानी क़ुव्वत मांद पड़ जाती है।

(16) नमाज़ बाजमाअत में क़ौमी वहदत पैदा करना भी लक्ष्य है। ऐसी वहदत के एक इमाम के पीछे सफ़ बांध कर खड़े हो जाएं और इसकी ऐसा अनुसरण हो कि अगर इमाम स्पष्ट रूप से ग़लती भी कर रहा हो तो भी इस का अनुकरण अनिवार्य है। क़ौमी ज़िन्दगी में यह शिक्षा बहुत महत्तव रखती है।

(17) बाजमाअत नमाज़ में इस तरह भी तवज्जा दिलाना लक्ष्य है कि अल्लाह तआला की निगाह में और इस के घर में पहुंच कर समस्त इन्सान बराबर हैं।

(18) नमाज़ की असंख्य बरकतों में से एक और बरकत जिसका आख़िर में ज़िक्र करना ज़रूरी है वह यह है कि नमाज़ों के द्वारा इन्सान सीधा अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में आ जाता है। क्योंकि इबादत वह बुनियादी कर्तव्य है जिसको पूरा करने के लिए इन्सान का जन्म हुआ। जैसा कि फ़रमाया وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونَ और जिन लोगों का जन्म कायनात का बुनियादी मक़सद हो रहा हो वह अल्लाह तआला की निगाह में बहुत प्रिय होते हैं जिनकी मोजज़ाना हिफ़ाज़त वह आज तक करता आया है। और हमेशा करता रहेगा। जंग बदर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने थोड़े से या कमज़ोर और निहत्थे सहाबा की इसी कारण से अल्लाह तआला से रहम और सहायता मांगी थी और इन सब्दों में अल्लाह तआला की बारगाह में फ़र्याद की

اَللّٰهُمَّ اِنْ اَهْلَكْتَ هٰذِهِ الْعِصَابَةَ فَلَنْ تُعْبَدَ فِي الْاَرْضِ اَبَداً

हे मेरे रहीम तथा करीम मालिक अगर आज मेरी यह मुट्ठी भर जमाअत हलाकत का शिकार हो गई तो फिर तेरी इबादत के मक़सद को पूरा करने वाले कभी दुनिया में नज़र नहीं आएँगे।

अत: सार यह है कि नमाज़ और खासतौर पर नमाज़ बाजमाअत में अल्लाह तआला ने ग़ैरमामूली बरकतें रखी हैं। हमें चाहिए कि इन अलग अलग बरकतों को नमाज़ों के द्वारा हासिल करें। और यह न भूलें कि नमाज़ हमारी सारी ज़िंदगी पर हावी है इस के प्रभाव सिर्फ़ मस्जिद के अंदर तक सीमित नहीं। इतनी बरकत वाले फर्ज़ से जिन घरों में ग़फ़लत और कोताही बरती जाती है उन के लिए सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम नया इनज़ारी रूप में में वर्णन फ़रमाया है कि मस्जिदें अल्लाह तआला के शाही कैंप हैं और जो लोग उन के मुक़ाबला पर अपने घरों को रौनक और सजावट में मगन रहते हैं। और ख़ुदा के शाही कैंप के प्रताप और मुसीबत से मुंह मोड़ने का प्रदर्शन करते हैं। ख़ुदा तआला की ग़ैरत ऐसे घरों को क़ायम नहीं रहने देती और उनकी सारी रौनक और सुकून छिन जाता है। इस लिए इन्सान जिस क़दर अपने घरों की आबादी के लिए फ़िक्रमंद रहता है। इस से कहीं अधिक अल्लाह तआला के शाही कैंप अर्थात मस्जिदों के आदाब और तक़ाज़े हैं। जिनकी इन्सान को फ़िक्र रहनी चाहिए। ऐसी ही कैफ़ीयत से दो-चार हो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक-बार फ़रमाया था कि जो लोग अपने घरों में बैठे रहते हैं और नमाज़ के लिए नहीं आते मैं चाहता हूँ कि इन के घरों को जला कर भस्म कर दिया जाए।

अल्लाह तआला हमें नमाज़ क़ायम करने की तौफीक़ प्रदान फरमाए। आमीन।